प्राक्कथन

सन 1960 के पश्चात हिंदी के उपन्यासों में कुछ नई प्रवृतियाँ उत्पन्न हुअी और विकसित भी हुअी। सन 1960 के बाद सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश के बदलाव के परिणाम स्वरुप इन नई प्रवृत्तियों का ठोस रुप उपन्यास विधा में उभरने लगा। गनतंत्र के लडखडाते परंतु गतिशील रुप के कारण सामान्य मनुष्य में एक ओर अपनी अस्मिता का एहसास हुआ तो दूसरी ओर अच्छे और सुनहरे जीवन के सपने एवं आदर्श भयावह परिवेश के सामने चौपट भी हुए। मोहभंग की स्थितियाँ भी उत्पन्न हुअी। राजनीतिक परिस्थितियाँ सामान्य व्यक्ति के जीवन को अच्छे और बुरे दोनों रुपों में प्रभावित करने लगी। जनतंत्रवादी सांचे में सामान्य मनुष्य का शैक्षणिक संस्कार हुआ और उसमें नये जीवन की आकांक्षाए उभरी और दूसरी ओर वह प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने रुबरु खडा हो गया। इन सभी परिवर्तीत बातों का प्रभाव साठोत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य पर पडा।

जमींदारी पध्दति, संमिश्र अर्थ व्यवस्था, औद्योगिक विकास, औद्योगिक विकास से उत्पन्न भ्रष्टाचार, चरमकोटी की विषमता, समाज में, शिक्षा संस्थाओं में, विश्वविद्यालयोंमें औद्योगिक प्रतिष्ठानों में बढता असंतोष और तनाव, सांप्रदायिक और जातीय विव्देष की झुलसती आग, वैश्विक युध्द की मंडराती छाया, चुनावी राजनीति से उत्पन्न आंतरिक विघटन की स्थितियाँ आदि कारणों से आज का युवा जनजीवन भयावह रुप से पीडित है।

इस बनती-बिगडती परिस्थितियों का प्रभाव साठोत्तर हिंदी उपन्यासों पर पडा। उपन्यास विधामें विराट व्यक्तियों के स्थानपर दब्बू बने चेहराविहीन चरित्रों की भीड बढने लगी। युवा वर्ग में उत्पन्न चेतना की आग भी आंदोलनों , हडतालों, मोर्चों और घिराओं के रुपमें प्रकट होने लगी। जीवन संघर्ष में अनेक समस्याओं का प्रतिबिंब झलकने लगा। आज जाति के नामपर होनेवाला विभाजन, औद्योगिक विकास के कारण सामाजिक वर्ग-व्यवस्थामें परिवर्तन, परंपरागत अंध जात्याभिमान आदि के कारण समाज में पेचीदा समस्याएँ उत्पन्न हो राही हैं। शिक्षित युवा-छात्र ऐसे समाज का एक अविभाज्य अंग होने के कारण इन समस्याओं से उसे भी टकराना पडा। समाज के सभी स्तरों पर शिक्षा के कारण जनजागृति हो चुकी है।

आज का हिंदी उपन्यास साहित्य यथार्थवाद की ओट में पल कर सभी सामाजिक परिवर्तीत प्रवृत्तियोंका प्रबलता के साथ प्रतिनिधित्व कर रहा है। उपन्यासकारों की नई पीढी नई चेतना को

ग्रहण करके लिख रही हैं। जनवादी उपन्यासकार समाजमें चेतना उत्पन्न करके समाज को प्रोत्साहित करनेका प्रयास कर रहे हैं। हिंदी उपन्यासों में चित्रित युवा-छात्र आंदोलन इसी चेतना--प्रवृत्ति की उपज लगता है। युवा-छात्रों की जीती-जागती ज्वलंत समस्याओं का और उसकी परिस्थितियों का एवं प्रतिक्रियाओंका सूक्ष्म निरीक्षण करके साठोततर हिंदी के उपन्यासकारों ने उनके सुख: दुख, आशा आकांक्षांओं को वाणी देनेका प्रयत्न किया और सरकारी शिक्षा-नीति तथा शैक्षिक संस्थाओं की अव्यवस्थाके कारण बढता हुआ छात्र असंतोष चित्रांकित करने का सफल प्रयास किया। इन उपन्यासों में विश्वंभरनाथ उपाध्याय का "पक्षधर", 1971, काशीनाथ सिंह का "अपना मोर्चा, 1972, भैरवप्रसाद गुप्त का "नौजवान", 1972, शिवप्रसाद सिंह का "गली आगे मुड़ती है", 1974, गोविंद मिश्र का"लाल-पीली जमीन", 1976, सुदर्शन माजीठिया का "उखडी हुअी आंधी, 1979 इन मुख्य उपन्यासों के साथ-साथ "कालेज स्ट्रीट के नये मसीहा", और "नई दिशा" आदि उपन्यास महत्वपूर्ण हैं। जिनमें युवा-छात्र आंदोलन की विभिन्न शक्लों को दिखाकर युवा-छात्र-मानस को सूक्ष्मता के साथ चित्रांकित किया है।

आज भारतीय छात्रों के व्यवहार में काफी परिवर्तन लक्षित होने लगा है। छात्रों के अनुचित और रोषपूर्ण व्यवहारों ने, उनकी अनेक हिंसक और विध्वंसक हरकतोंने विश्वविद्यालयीन शैक्षिक व्यवस्था को आंदोलित कर दिया है और भारतीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को पूरी तरह प्रभावित किया है। भारत के छात्रों की उग्रवादिता विश्वव्यापी छात्र-विद्रोह से अधिक गहरी और संगठित रही है। भारतीय छात्रों की अशांति बर्कले, बर्लिन और पेरिस के छात्रों की अशांति से कोई संबंध नहीं रखती है। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, **आर्थिकमंदी**, सांस्कृतिक धार्मिक रुढिवादिता, आदि सामाजिक समस्याओंने भारतीय छात्र-शक्ती को उकसाने का काम किया। इन समस्याओंसे ग्रस्त छात्रोंने समाज के विरुध्द विद्रोह करना शुरु किया। भारतीय राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओंने जब गंभीर रुप धारण किया तब छात्र-**शक्ति** ने संगठित बनकर हिंसक उपद्रवोंव्दारा राजनीतिक व्यवस्था को चुनौति देना शुरु किया। सन 1974 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में गुजरात में हुआ छात्र आंदोलन इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है। यह आंदोलन सामाजिक दशाओं में सुधार लानेके लिए, समाजजीवन के परिवर्तन के लिए, सरकारी नीति के खिलाफ टकराने के लिए, अर्थिक और नैतिक क्रांति की आवश्यकता के लिए चलाया गया था।

स्वतंत्रता के बाद छात्र आंदोलन विभिन्न राजनीतिक दलों के संरक्षक बने। छात्र संगठन राजनीतिक दलों के स्वार्ध-सिध्दी के माध्यम बने। उनकी राजनीतिक गतिविधियाँ विश्वविद्यालयों के

प्रांगण तक ही सीमित रही। देश की सामाजिक और शैक्षिक व्यवस्था पर इसका बडा प्रतिकूल असर पडा। इससे सार्वजनीक जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुअी। विश्वविद्यालयों का वातावरण दैनंदिन संघर्ष और अनुशासनहीनता की अनेक घटनाओंके कारण दूषित होने लगा। सामाजिक और शैक्षिक सुधाए के बदले विश्वविद्यालय स्थानीय राजनीतिके अड्डे बने। इस अवसर का लाभ उठाकर कुछ स्वार्थपरक नेता विश्वविद्यालयों को प्रोदेशिकता और भाषावाद की राजनीतिका माध्यम बनाने लगे। नाना प्रकार के सब्जबाग दिखाकर अपने संकीर्ण हितों के लिए छात्रों की बली देने का काम राजनीतिक नेता करने लगे जिससे भारतीय विश्वविद्यालयीन छात्रों में विस्थापन और अनुशासनहीनता का निर्माण हुआ।

भारतीय जनजीवन की क्षेत्रीय विभिन्नताएँ छात्रोंकी राजनीतिक गतिविधियों में भी प्रत्यावर्तीत हुअी। सन 1963 में आंध्रप्रदेश, प.बंगाल और बिहार के छात्रों का असंतोष उनकी राजनीतिक क्रियाकलापों में अभिव्यक्ति पाता रहा। महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश , तामिलनाडू, कर्नाटक के छात्रों ने नामांतर, भाषावाद, सीमावाद आदि को लेकर छूट-पूट आंदोलन किये। उत्तरी भारत में मंडल आयोग, जैसे मसले को लेकर अनेक हिंसक आंदोलन हुअे। वहाँ छात्रों ने अनेक हिंसक हडतालों का आयोजन किया। आतंकवादियों के मेलजोल से दबावपूर्ण स्थितिका निर्माण किया। पंजाब और काश्मिर इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं। पंजाब, राजस्थान, उडीसा में सामाजिक समस्याओं से टकराने के लिए अनेक छात्र आंदोलन खडे हुअे। संक्षिप्त में दिल्ली, बनारस, प्रयाग, उडीसा, मद्रास, आंध्र, बिहार आदि जगहोंपर बार-बार छात्र आंदोलन खडे हो चुके हैं। इनमें से कअी आंदोलन सत्ताधारी और विपक्षी राजनीतिक दलों के आपसी टकराहट की उपज रहे हैं।

आज छात्र-असंतोष गलत राह पकडने लगा है। राममंदिर-बाबरी मसजिद, मंडल आयोग जैसे मसलों के तहत छात्र-शक्ति बंटती जा रही है। इसीसे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की संभावना दबती जा रही है। छात्र आंदोलन का मूल कारण सामाजिक समस्याओं में छिपा है। अपर्याप्त सुविधाओं का बढता हुआ दबाब, शिक्षा का गिरता हुआ स्तर, परिवारिक अभावग्रस्तता का मानसिक बोझ, स्नातकोत्तर शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त भी बेरोजगारी का भय, समाज में आदर्श की कमी, आत्मकेंद्रितता का बढता हुआ दौरदौरा दुर्बल आर्थिक स्थिति की बुनियाद पर स्थित परिवारोंकी टूटनशीलता, महानगरीय भीडभाड में स्थित आतंकवाद, पारीवारिक तान-तनाव विश्वविद्यालयीन प्रशासन की गलत नीतियाँ आदि के कारण भारतीय विश्वविद्यालयीन छात्र शक्ति हिंसक प्रदर्शनों में जुड गयी है। उपर्युक्त छात्र-शक्ति के पहलुओ के दर्शन हमें शिवप्रसाद सिंहजी के "गली

आगे मुडती है" में चित्रित भाषा–विषयक आंदोलन के माध्यम से होते हैं। "गली आगे मुडती है" में शिवप्रसाद सिंहजीने उचित शैक्षिक वातावरण का विश्वविद्यालयोंमे अभाव, विश्वविद्यालयीन पदाधिकारियों और प्राध्यापकोंकी गिरती हुअी प्रतिष्ठा, विश्वविद्यालयीन छात्र–शक्ति को उकसानेवाली बिचौलिया शक्तियाँ, राजनीतिक हेराफेरी के कारण विश्वविद्यालयों के परिदेश में ज्ञानगंगा के खिलाफ बननेवाली अलग–अलग वैतराणियाँ, अपरिवर्तनशील अयोग्य और अनुचित शिक्षा पध्दतियाँ, विश्वविद्यालयीन शिक्षा–दिक्षा की छात्र–शक्ति की आकांक्षापूर्ति के खिलाफ स्थितियाँ, परीक्षा पध्दति में प्रविष्ठ विकृतियाँ, प्रमाण पत्रों का बढ़ता हुआ बाजारुपन, पुरानी शिक्षा पध्दति और समाज के नये विचारों तथा आकांक्षाओं में स्थित विसंगति आदि के कारण छात्र–शक्ति में असंतोष बढता जा रहा है। "गली आगे मुड़ती है" में शिवप्रसदाजी ने इन कारणों को सूक्ष्मता के साथ तलाश ने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में अयोग्य लोगों का इस क्षेत्र में पदार्पण, सामाजिक क्षेत्र के उपेक्षित लोगों का इस क्षेत्र में आगमन, अध्यापकों, प्राध्यापकों की नियुक्तियोंमें राजनितिक हस्तक्षेप, के कारण योग्यता प्राप्त प्राध्यापकों की जीवन–प्रणाली और कर्तव्यनिष्ठा का अंकन योग्यता की अपेक्षा राजनीतिक पैंतरेबाजी पर निर्भर, छात्रों की संख्या में होनेवाली वृध्दि, ग्रामीण और पिछेड वर्ग से आये हुए छात्रों का विश्वविद्यालयीन सांठ–गांठ से संबंध, इससीसे उत्पन्न छात्र जीवन पर एक निराशाजनक माहौल आदि का चित्रण भी "गली आगे मुडती है" में शिवप्रसादजी ने किया है।

आलोच्च उपन्यास "गली आगे मुड़ती है", में विश्वविद्यालयीन छात्र आंदोलन की गलत राह, युवा फरस्ट्रेशन, युवा–छात्र–आक्रोश की नाना शक्लें, युवा शक्ति की उर्जा, उनकी पस्त होती हुअी मानसिकता, युवा–छात्र–शक्ति की क्रांतिकारी प्रवृत्ति, सामाजिक गतिविधयों से कटकर नीड–सेवी बनने की स्थिति, रामानंद तिवारी जैसे छात्र की आत्मभीरुता , हरिमंगल जैसे छात्र की साहसी प्रवृत्ति, विश्वविद्यालयीन छात्रों का भविष्यत के प्रति उदास दृष्टिकोण. इसी उदासी के कारण उनमें पनपी हुअी खीज, आज के छात्रों की अनिश्चयवादी मानसिकता, संघर्षशील युवा–छात्र–शक्ति की संधि करने के लिए तत्पतरता, छात्रों में वैचारिक शक्ति का प्राबल्य होकर भी आंधी में उडते हुए तिनके की भाँति उनकी स्थिति, टूटेंगे परंतु झुकेंगे नहीं में आस्था रखनेवाली छात्र–शक्ति, हिंदी भाषा विषयक सरकार की उदासीनता के कारण संगठित हुअी छात्रशक्ति, युवा आंदोलन में हिंसकता, तोड–फोड, लूट–पाट, अग्निकांड, मारकाट, खून–खराबा, पुलिसों व्दारा छात्र–शक्ति पर होनेवाले अनन्वित अत्याचार, इससे उत्पन्न भागदौड, पीटाई, गिरफ्तारी, गोलाबारी, छात्रसंगठनव्दारा

डॉ. भट्टाचार्य की घिरावबंदी, छात्र आंदोलन की गलतनीति, छात्र-नेताओं की स्वार्थी उत्पोक और हासिलवादी प्रवृत्ति, युवा छात्र-शक्ति का सूरा और सुंदरी के साथ जुडाव, युवा-छात्र-शक्ति की मजबूरी, छात्र - शक्ति में प्रविष्ठ भोगासक्ति, विध्वंसक प्रवृत्ती आदि का चित्रण सूक्ष्मता के साथ करके शिवप्रसाद सिंहजी ने छात्र-शक्ति की विविध शक्लों से पाठकों को परिचित कराकर युवा-छात्रों व्दारा चलाये गये आंदोलन के "पक्षधर" होकर भी छात्रों की गलत नीति को सही रास्ते पर लाने के लिए कअी सुझाव भी पाठकों के सामने रखे हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को, हमने छः अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय :

"आजादी के बाद हुए विविध जनांदोलन" में कृषक आंदोलन, दलित मुक्ति आंदोलन, मिलमजूदर आंदोलन, नारी मुक्ति आंदोलन, युवा आंदोलन आदि आंदोलनों का जिक्र करके इन आंदोलनों की पृष्ठभूमि तथा इनके निर्माण के कारण विशद किये हैं।

द्वितीय अध्याय :

"गली आगे मुड़ती है" में चित्रित समस्याएँ" के अंतर्गत धार्मिक आडम्बर की समस्या, विश्वविद्यालयों में स्थित भ्रष्टाचार की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, गुडई की समस्या, बाढ की समस्या, भा ा आंदोलक की समस्या, पुलिस भ्रष्टाचार की समस्या, ग्राहकों को ढगाने की समस्या, अश्लीलता की समस्या, आंतकवाद की समस्या, जातीयवाद की समस्या, आदि समस्याओं पर चिंतन करके शिवप्रसाद सिंहजी ने इन समस्यओं का हल ढूँढने का प्रयास कैसे किया है, इसपर भी प्रकाश डाला है।

तृतीय अध्याय :

"साठोत्तरी हिंदी के उपन्यासों में चित्रित छात्र आंदोलन" के अंतर्गत हमने विश्वंभरनाथ उपाध्याय के "पक्षधर", 1971, काशिनान सिंह के "अपना मोर्चा, 1972, भैरवप्रसाद गुप्त के "नौजवान", 1972, शिवप्रसादसिंह के "गली आगे मुड़ती है," 1974, गोविंद मिश्र के "लाल-पीली जमीन 1976, सुदर्शन मजिठिया के "उखडी हुअी आंधी," 1979, आदि छात्र आंदोलनपर आधारित उपन्यासों का जिक्र प्रस्तुत करके सन 1971 से 1979 तक के छात्र आंदोलन निर्मिति के कारण विशद किये हैं।

चतुर्थ अध्याय :

"गली आगे मुडती है" का शिल्प विधान" में कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, कथोपकथन वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि तत्वों की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास की समीक्षा करके लेखक ने शिल्पविधान में किये हुए नये प्रयोगों का भी उल्लेख किया है।

पंचम अध्याय :

"गली आगे मुड़ती है" में चित्रित छात्र आंदोलन: एक मूल्यांकन" में काशी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमिपर विश्वविद्यालयीन छात्रोंव्दारा खडा किया गया भाषा आंदोलन, शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ छात्रों के असंतोष आदि का चित्रण करके छात्र शक्ति को सही रास्ते पर लानेवाले कअी आयामोंका जिक्र पेश किया है।

षष्ठ अध्याय :

"उपसंहार" में "गली आगे मुड़ती है" में चित्रित छात्र आंदोलन : एक मूल्याकन की कारणमिमांसा और उसके शमन के कारणों का विवरण प्रस्तुत किया है।

"मेरा यह सौभाग्य है कि, मुझे वेणुताई चव्हाण कॅालेज, कराड के हिंदी विभाग के रीड़र तथा विभाग अध्यक्ष प्रा. डॉ. वाय्. बी. धुमाळजी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में शोधकार्य करने का अवसर मिला। उनके उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्वका यह शुभ परिणाम है कि एकनिष्ठ भाव से शोध-कार्य में संलग्न रहने की धैर्यशक्ति मैं पा सकी और अंततः शोधकार्य को संपन्न कर सकी। श्रध्देय गुरुवर डॉ. वाय्. बी. धुमाळजी ने अपने व्यस्त क्षणों में मुझे अपना अमूल्य समय देकर वहुमूल्य निर्देशों के व्दारा "छात्र आंदोलन" के विविध सैध्दांतिक पक्षों को तलाशने की प्रेरणा दी। उनके शांत, गंभीर व्यक्तित्व एवं उदार भाव से युक्त ज्ञान के फलस्वरुप ही यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका है। उनके प्रति यह शांब्दिक आभार मरे हृदय में स्थित भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

लालबहादुर शास्त्री कॅालेज, सातारा के प्राचार्य पुरुषोत्तम शेठ तथा हिंदी विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष डॉ. गजानन सुर्वे,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर के हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ. पी. एस्. पाटील तथा डॉ. अर्जुन चव्हाण की मैं हृदय से आभारी हू जिन्होंने समय-समय पर निर्देश देकर मेरे शोधकार्य का मार्ग प्रशस्त किया। इस लघुशोध प्रबंध के कार्य में मुझे सौ. नयना धुमाळ की भी विशेष सहायता मिली जिन्होंने मुझे इस कार्य के हेतु बार-बार प्रोत्साहित किया। इस लघुशोध

प्रबंध के कार्य में मुझे मेरे पिताश्री कै.आनंदराव कदम और माताजी श्रीमती यशोदा की प्रेरणा मिली। मेरे भाई--बहन और परिवार के सभी सदस्यों ने मुझे महत्वपूर्ण साहयता दी। मेरे पती श्री.जगन्नाथराव जाधव की भी सहायता मिली जिसके कारण मैं इस कार्य में सफलता पा सकी। इस लघु-शोध-प्रबंध के कार्य के लिए मैं "गली आगे मुड़ती है" के उपन्यासकार शिवप्रसाद सिंहजी की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने पत्रोत्तर के माध्यम से मेरी सहायता की।

शिवाजी विश्वविद्यालय के बॅ.बाळासाहेब खडेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारी, वेणूताई चव्हाण कॅालेज, कराड के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, सदगुरु गाडगे महाराज कॅालेज, कराड के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, लालबहादूर शास्त्री कॅालेज, सातारा के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारी आदि की मैं विशेष ऋणी रहूँगी. जिन्होंने पुस्तकें जुटाने में अत्यंत तत्परता से मेरी सहायता की। इस प्रबंध के टंकन का अत्यंत महत्वपूर्ण काम श्री.प्रकाश पन्हाळेजी और सुश्री अलका कुलकर्णीजी ने किया उनके सहकार्य के लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ।

कराड

दिनांक : 27·5·1995

विनित

कदम सुनिता आनंदराव